यह अंतिम जन्म , पावन बन हिसाब -किताब चुक्तु करना
विकर्मो से मुक्त होने का पुरुषार्थ करना
बाप देह सहित सबका कराते संन्यास
माया देह से लगाव ला प्रतिज्ञा तुड़वाती
प्रतिज्ञा तोड़ते तो सज़ा फिर खानी पड़ती
माया की धोखे से स्वयं को बचाना
देह -अभिमान में नही आना
एक बाप से सच्ची प्रीत रखना
निरबंधन होना तो ट्रस्टी बनना
देह व देह के सम्बन्ध बंधन है ..पिंजड़ा
पिंजड़े की मैना नही.. बनना है फरिश्ता
मरजीवा माना सर्व बंधन समाप्त
मन के बंधन से भी होना मुक्त
संकल्प बचाना होता, समय और बोल बचाना

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!